वर्ष – 21 मार्च, 2025 अंक – 222

Regd. Postal No. Dehradun-328/2022-24
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक सम्प्रदाय के ऐसे अधिकारी जनों को समर्पित है, जो ऐसी जीवन शिक्षा की खोज में हैं, जो धर्म और विज्ञान में सामंजस्य स्थापित कर पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरो सके और उनका सर्वोच्च आत्मिक हित कर उन्हें प्रकृति के विकासक्रम का साथी बनाकर मनुष्य जीवन को सफल व ख़ुशहाल कर सके।

सम्पादक
नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल
अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : आरती

YouTube Channels

Sadhan Sabhas : Shubhho Roorkee
Motivational : Shubhho Better Life
Workshops : Jeevan Vigyan
Bhajan : Shubhho Bhajan
www.shubhho.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मूल्य (प्रति अंक): रु. 9

सम्पर्क सूत्र : पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु
दूरभाष संख्या: 01332-272000, 80778-73846, 99271-46962 (संजय जी)
समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)
e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

इस अंक में

देववाणी	03
क्या करना बाकी रह गया	04
कोई बात नहीं	06
सादगी ही सच्ची सुन्दरता	08
दो राहें एवं दो परिवारों....	11
भजन	13
Goodness is Everyday..	14
देव जीवन की झलक	17
भोपाल केन्द्र समाचार	21
पशु एवं वनस्पति के परलोक...	22
प्रकृतधर्म का आधार नेचर तत्व	24
साधन एवं उद्बोधन सेवा	28
गोपालपुर से ख़ुशखबरी	30
उच्च जीवन प्रशिक्षण संस्थान..	31

पत्रिका सहयोग राशि

पत्रिका हेतु सहयोग राशि आप सामने दिये QR CODE या Mission Website - https://shubhho.com/donation./ पर भेज सकते हैं। सहयोग राशि भेज कर Screenshot 81260 - 40312 पर भेजें।

Scan & Pay through any Bharat QR/UPI App

SATYA DHARAM BODH MISSION

Our Bank Details

Satya Dharam Bodh Mission A/c No. 4044000100148307
(PNB) IIT, Roorkee, RTGS/IFSC Code : PUNB0404400

पत्रिका की सॉफ्ट कॉपी (फ्री) मंगवाने हेतु 81260 - 40312 इस नम्बर पर सूचित करें।

पत्रिका चन्दा

1. रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा (दो माह की पत्रिका एक साथ) - वार्षिक सहयोग - 250/-
2. साधारण डाक द्वारा (प्रति माह) - वार्षिक सहयोग - 100/-
   सात वर्षीय रु. 500, पन्द्रह वर्षीय रु.1000

अधिक जानकारी हेतु सहयोगकर्त्ता

Call/Whatsapp - 81260 - 40312

व्यवहार ऐसा रखें कि कभी कोई रूठ न पाए, रिश्ते ऐसे बनाए कि कभी टूट न पाएं यदि किसी का साथ दें तो ऐसे दें कि साथ कभी छूट न पाएं।

देववाणी

भगवान् ने व्याकुलता से भरकर फ़रमाया कि मैं रात को सो नहीं सकता। मुझे अपने जीवनव्रत में काम आने के लिए, काम के आदमी नहीं मिलते, यह देश किस तरह उभरेगा? क्या तुम दुनिया के पीछे अपना सब कुछ (मुख्य और सार आत्मा) लुटा दोगे?......... बहुत होशियार आदमी थे, लेकिन उन्होंने एक स्त्री का गुलाम बनकर सब कुछ लुटा दिया। यह मनुष्य के लिए बहुत शर्म की बात है कि वह नीच अनुरागों के पीछे अपना जीवन लुटा देता है। तुम बताओ की कमिशनर कि कृपा दृष्टि हासिल करने से क्या मिलता है? क्या आत्म अन्धकार दूर होगा? नीचता मिटेगी? उच्च भाव पैदा होगा? यदि नहीं, तो फिर क्यों उनके पीछे फिरते हो? क्यों नहीं धर्मकारज में लगाकर अपना जीवन सफल करते? हमारे ईदगिर्द लोगों में मामूली हमदर्दी भी नहीं। मैं रात को तड़पता रहता हूँ, लेकिन मेरे लिए किसी के अन्दर कोई हमदर्दी नहीं। सुबह होने के साथ उल्टा मेरे ऊपर नाना कामों का बोझा रखा जाता है। मैं हितस्वरूप होकर काम करने से इनकार नहीं कर सकता, परन्तु लोगों में मामूली हमदर्दी भी नहीं है। मैं अकेला हूँ, यह देवात्मा होने की सज़ा है।

– देवात्मा

गुदगुदी

1. ठण्ड इतनी पड़ रही है कि अकड़ के बैठने वाले लोग भी...सुकड़ के बैठ रहे हैं!
2. लड़की – देखो जानू, इश्क मोहब्बत अपनी जगह है पर....ठण्डे-ठण्डे हाथ लगाए तो रैपटा मार दूँगी।
3. इतनी ठण्ड में ग़लती से नहा भी लो, तो घरवाले शक करने लगते हैं ज़रूर किसी चुड़ैल से मिलने जा रहा होगा।
4. ज़िन्दगी में एक बात याद रखना, आपको आँसू पोंछने वाले बहुत मिलेंगे, नाक पोंछने के लिए कोई नहीं आता, इसलिये अपना ख्याल रखना।
5. सर्दियों में आलू के पराठे खाकर धूप में मगरमच्छ की तरह पड़े रहने में जो सुख है. ..उसे ही असली सुख कहा गया है। वाह रे आलस्य अनुराग!

तारीफ़ करने वाला आपकी स्थिति देखता है और परवाह करने वाला आपकी परिस्थिति देखता है।

सम्पादकीय क्या करना बाकी रह गया?.....

कुछ दिन पूर्व सीनियर सिटीजन की एक मीटिंग में बुद्धिजीवियों के बीच मुझे चन्द मिनट बोलने हेतु निवेदन किया गया। मुझसे पूर्व कई विद्वान वक्ता, धार्मिक नेता व सामाजिक कार्यकर्ता अपना प्रभावशाली उद्बोधन दे चुके थे। मैं असमंजस में था कि इन सबको क्या प्रेरणा दूँ।

इस सबके बीच पूर्ववत् सहायकारी शक्तियों की सूक्ष्म सहायता मिली और जो संक्षेप में कहलवाया गया, वो हृदयों पर एक अमिट छाप छोड़ गया -

उपस्थित साहवान, आप सभी को उपस्थित हृदय से नमन करता हूँ। जहाँ तक किसी अच्छी बात को सांझा करने का प्रश्न है, उसमें ज़्यादा गुंजाइश बची नहीं है। जो कुछ अच्छा बताया जा सकता है, वह या तो पुस्तकों व ग्रन्थों में लिखा जा चुका है अथवा महापुरुषों, वक्ताओं, समाजसेवियों द्वारा कहा जा चुका है, अब तो एक ही काम बाकी रह गया है - उसे जीवन में उतारना। Implementation is due.

हम बचपन से अच्छी बातें, संस्कारों की बातें, क्या सही व क्या ग़लत है, सुनते आये हैं, अब उन्हें जीवन में उतारना ही शेष है। यही वो कार्य है, जो करना रह गया है।

इस विषय में एक ज़रूरी तथ्य स्पष्ट करना ज़रूरी है कि सुनने व अपनाने के बीच की यात्रा में तीन पड़ाव आवश्यक हैं।

- सुनना यानि Listening या reading पहला क़दम है। इससे आगे पहला पड़ाव है - समझना। यदि बात समझ नहीं आई, तो सुनना/पढ़ना व्यर्थ। समझना यानि उस बात को किसी अन्य को समझा पाने की योग्यता प्राप्त करना। आवश्यक है कि किसी अच्छी बात को तब तक ध्यान से सुना व पढ़ा जाये, जब तक समझ में न आ जाये।

- दूसरा पड़ाव है - चिन्तन/विचार। जिस बात को सुन व समझ लिया, उस पर एकान्त में निज का चिन्तन/मनन/विचार करना तथा अपना निष्कर्ष निकालना/निचोड़ पर पहुँचना ज़रूरी है।

- तीसरा पड़ाव है - विश्वास। जिस बात को सुन लिया, समझ लिया, मनन/विचार भी कर लिया, उस पर विश्वास करना आवश्यक है। जब तक किसी बात पर विश्वास नहीं जमेगा, चाहे वो कितनी ही अच्छी क्यों न हो, व्यक्ति उस ओर चलेगा नहीं। विश्वास से ही मंज़िल की राह खुलती है।

सबसे बड़ी ख़ुशी प्रेम देने व प्रेम ले पाने में छुपी है। काश, मैं अपने हृदय में उन भावों को जागृत् कर सकूँ, जिनसे मैं ये दोनों कार्य सहजता से कर पाऊँ।

– मंज़िल है – अपनाना यानि Implementation.

निष्कर्षत: – बड़े सौभाग्यवान् हैं वे जन, जो अच्छी बातों को सुनते/पढ़ते हैं तथा समझने, विचार व विश्वास करने के तीन पड़ावों को पार करते हुए जीवन में उन बातों को अपनाने की मंज़िल को पा जाते हैं। अन्यथा अच्छी बातें सुनने या सुनाने का विषय बनकर रह जाती हैं, उनसे लाभ मिलने के स्थान में हानि की संभावना बढ़ जाती है, क्योंकि ऐसे में ज्ञान का अहंकार हो जाता है।

काश, हम सब उपरोक्त पड़ावों को ध्यान में रखते हुए जीवन में क्या करना बाकी रह गया – इस तथ्य को जान सकें, ऐसी है शुभकामना!

– प्रो. नवनीत अरोड़ा

संस्कार

संस्कार दिये बिना बच्चों को सुविधाएं देना, पतन का कारण हैं। सुविधाएं अगर हमने बच्चों को नहीं दीं, तो हो सकता है वे थोड़ी देर के लिए रोयें। परन्तु, यदि उन्हें संस्कार नहीं दिये, तो वे ज़िन्दगी भर रोयेंगे।

जीने के सूत्र

1. आपका जीवन जीने का ढंग बेशक साधारण हो, परन्तु अपने दिमाग़ में सदैव उच्च विचार लाएं।
2. अच्छा साहित्य पढ़ें और उच्च मूल्यों व आदर्शों को अपनाएं।
3. अच्छे दोस्त चुनें। वे सदैव आपको अच्छे कार्य हेतु प्रेरित करेंगे।
4. अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारियों को नजर अन्दाज न करें। कभी-कभी समय निकालकर बेसहारा व अनाथ बच्चों से मिले, यथासम्भव उनकी मदद करें।
5. किसी के मन को चोट न पहुँचाएं, सदैव सबका भला सोचें।
6. निन्दा चुगली से बचें। सकारात्मक सोचें, नकारात्मक कभी न सोचें।
7. आदर प्राप्त करने का एकमात्र उपाय यह है कि पहले आप दूसरों का आदर करें।
8. दूसरों को प्रसन्न रखने की कला स्वयं प्रसन्न होने में है।
9. प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं – आवश्यकताएं कम करें और परिस्थिति से तालमेल बिठाएं।

विचारों को पढ़ने मात्र से जीवन में कोई बदलाव नहीं आता। विचार तभी बदलाव लाते हैं, जब उन्हें जीवन में उतारा जाता है।

कोई बात नहीं

सयानों ने कहा है कि दिन-प्रतिदिन के जीवन में कई बातों को देखकर भी अनदेखा कर देना आवश्यक है। अपनी मानसिक शान्ति तथा पारिवारिक सुख-चैन हेतु यह एक अचूक नुस्खा है। रामबाण औषधि है। देखने में आता है कि सामान्यतः परिवारों में गृहकलह का मुख्य कारण बड़ों द्वारा टोकाटोकी तथा मीनमेख निकालना ही होता है। छोटी-छोटी बातें बड़ा रूप लेती जाती हैं और परिवार की सुख-शान्ति को ग्रहण लगते देर नही लगती। कैसी विडम्बना है कि जिस रोक-टोक, टीका-टिप्पणी से आज हम खीजतें, चिढ़ते हैं, बड़ी उम्र को हो जाने पर हम स्वयं वहीं रवैया अपना लेते हैं। देखी-अनदेखी करना, नजरअन्दाज कर देना, दरगुजर करना, ध्यान न देना बहुत ज़रूरी है न केवल घर-परिवार के परिप्रेक्ष्य में बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में। जो इस गुरुमंत्र को गाठ बान्ध लेते हैं, वह सुखी रहते हैं। लोकप्रिय होते हैं, सबके चहेते बन जाते हैं, हर प्रकार के तनाव से मुक्त रहते हैं, जीवन का भरपूर आनन्द उठाते हैं।

हमारे एक परिचित जो जीवन में हर प्रकार से सफल समृद्ध सुखी माने जाते हैं, का एक प्रकार से तकिया कलाम ही है – 'कोई बात नहीं।' हम उन्हें ये वाक्यांश अक्सर दोहराते सुनते हैं। हमारे पूछने पर एक दिन उन्होंने बताया कि उनके लिए भौतिक सुख समृद्धि सफलता का नहीं, बल्कि मानसिक शान्ति, निश्चिंतता तथा सकारात्मक सोच का मूलमन्त्र भी यही जुमला 'कोई बात नहीं' है। कोई भी नुक़सान हो जाने पर, कोई भी परेशानी आने पर, कोई कठिनाई उत्पन्न हो जाने पर उनका तत्काल रीएक्शन होता है – 'कोई बात नहीं।' ऐसा वह मात्र कहते ही नहीं वह ऐसा ही सोचते भी हैं। ऐसी ही मानते भी हैं। सोचकर देखिये, कोई नुक़सान हो गया। अब या तो उस पर हाय-तौबा मचायें, खीजें, परेशान हों या यह सोचकर कि नुक़सान तो हो ही गया है, उसे तो बदला नहीं जा सकता। 'कोई बात नहीं' वाला फार्मूला अपनाकर यह देखें कि उसमें से क्या कुछ उबारा जा सकता है। साथ ही यह भी सुनिश्चित करने हेतु तत्काल कदम उठाएं कि वैसा नुक़सान फिर न हो। निश्चय ही दूसरा समाधान बेहतर है। 'कोई बात नहीं' की तर्ज पर एक सज्जन को अकसर कहते सुना है - 'जाने भी दो।' शब्द भिन्न है किन्तु उनकी भी सोच और मान्यता वही है। परिणामस्वरूप इन सज्जन की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक उपलब्धियाँ ही नहीं उनकी जीवनशैली, उनका व्यवहार, आचरण, दृष्टिकोण भी अनुकरणीय माने जा सकते हैं। बहुत दिनों से इन सज्जनों की इन व्यावहारिक विशेषताओं को देखते हुए हमने भी 'कोई बात नहीं' और 'जाने भी दो' को अपने जीवन में उतारने का निश्चय किया। विश्वास मानिये कुछ दिनों के ही

किसी को भी ख़ुश करने का मौक़ा मिले, तो छोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि वे फ़रिश्ते ही होते हैं, जो किसी के चेहरे पर मुस्कुराहट दे पाते हैं।

अभ्यास ने हमारे व्यक्तित्व में कई गुणात्मक परिवर्तन ला दिये हैं। अब हमें बात-बात पर, बात-बेबात, छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा नहीं आता। नुक्रसान हो जाने पर हम झुंझलाते खीजते नहीं रहते। 'कोई बात नहीं' कहकर हम मन के आवेग पर लगाम लेते हैं। एक बार आवेग का उफान बैठ गया, तो फिर स्थिति-परिस्थिति का सही-सही, सन्तुलित पूर्वाग्रहरहित आंकलन करना, समाधान ढूँढ़ना अपेक्षाकृत सुगम हो जाता है। 'कोई बात नहीं' और 'जाने भी दो' के इस मन्त्र को आप आजमाइये, अपनाइये और इसका चमत्कार देखिये।

साभार 'प्रेरणा दर्पण' – ओम प्रकाश बजाज (जबलपुर)

वहम

कैसे-कैसे वहम पाल हमने रखे हैं,
मन मस्तिष्क में तान मकड़जाल रखे हैं।
फटा हुआ पोस्ट कार्ड अनिष्ट दर्शाता है,
हाथ में आते ही चेहरा उतर जाता है।
बिल्ली रास्ता काटे तो हम थम जाते हैं,
कुछ भी हो जाये पग आगे नहीं बढ़ाते हैं।
छींक भी अमंगल का संकेत होती है,
कौआ सिर पर बैठे तो असमय मौत होती है।
आँख फड़के तो सत्यानाश होता है,
दिशाशूल राहु केतु से विनाश होता है।
तेरह की संख्या अशुभ अनिष्टकारी है,
न जाने कितनों पर शनिचर भारी है।
बेकार के अन्धविश्वास पाले हुए हैं,
बुद्धि पर अलीगढ़ी ताले डाले हुए हैं।
पढ़े-लिखे भी इन वहमों से नहीं उबरते हैं,
बात-बात में 'टच वुड' वह भी करते हैं।
इक्कीसवीं सदी में भी हम क्या कर पाएंगे,
इन ढकोसलों से यदि पिण्ड नहीं छुड़ाएंगे?

– ओम प्रकाश बजाज (जबलपुर)

सबसे क्रीमती प्रॉपर्टी वह है, जो आप अपने अच्छे व्यवहार व नेक जीवन से दूसरों के दिल में जगह घेरते हैं।

सादगी ही सच्ची सुन्दरता

कहा गया है, सादगी जैसी सुन्दरता नहीं। सादगी पसन्द लोगों का ध्यान बाहर की सजधज पर नहीं होता। वे स्वच्छता, निरहंकारिता इत्यादि गुणों को धारण करते हैं। मन की सच्चाई, अनुकूल वस्त्र, शुद्ध भोजन और दैनिक सफ़ाई के बिना सादगी का कोई अर्थ नहीं है। जहाँ तक सजधज का प्रश्न है उसके बारे में तो सबकी अपनी-अपनी पसन्द होती है और फैशन तो आये दिन बदलते ही रहते हैं, परन्तु सादगी तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का सौन्दर्य है।

मम्मी के बार-बार आवाज लगाने के बाद भी शीला, पड़ोस वाली आन्टी के घर से आने को तैयार ही नहीं थी। बहुत देर बाद जब वह घर पर आई, तो उसके चेहरे पर अजीब-सी चमक देखकर माँ ने पूछा - बेटी, क्या बात है? आज तो तू बहुत ख़ुश दिखाई दे रही है, आन्टी ने ऐसा क्या जादू डाला है तुझ पर? तब शीला ने बताया, मम्मी, आन्टी बड़ी सादगी से रहती हैं, लेकिन उनका बात करने का तरीका, उठना-बैठना इतना रॉयल है कि उनके पास से हटने को मन ही नहीं करता। जब वो हँसती हैं तो ऐसा लगता है मानो मुख से फूल झड़ रहे हैं। उनके चेहरे की शालीनता, उनका आत्मविश्वास देखते ही बनता है। जब वह बातें करती हैं तो ऐसा लगता है मानो प्यार का स्त्रोत फूट पड़ा हो। घमण्ड का तो उनके चेहरे पर नामोनिशान ही नहीं। वह सभी से मिलती-जुलती हैं। जो भी उनके पास एक बार चला जाता है, उन्हें भुला नहीं पाता। उसी समय दरवाजे की घण्टी बजी। शीला ने उठकर दरवाजा खोला तो देखा, कॉलोनी वाली आन्टी खूब तड़क-भड़क, साज-सज्जा सहित आई हैं। कहती हैं - शीला बिटिया, तुम्हारे यहाँ से एक कटोरी शक्कर तो दे दो, आज मेहमान आ गये हैं, चाय बनानी है। वह क्या है कि शाम को जब रिंकू के पापा घर आयेंगे तो ढेर सारी शक्कर ले आयेंगे। मेरे घर में कभी कोई चीज़ की कमी नहीं रहती। मेरा तो सभी से बहुत मिलना-जुलना चला करता है - इस प्रकार की बातें करके वो अपना फैशन प्रदर्शित करती रही। उसकी बनावटी हँसी उसके चेहरे को और अधिक बदरंग कर रही थी। कहने का अर्थ यह नहीं कि नारी श्रृंगार को ही त्याग दे, परन्तु इसके लिये कई सवाल सामने आकर खड़े हो जाते हैं, जिनका निदान आवश्यक है जैसे -

1. क्या सादगी का यह अर्थ है कि सौन्दर्य और साजसज्जा का ध्यान ही नहीं रखा जाए?
2. यदि ख़ुशी के अवसर पर सजधज न हो या जीवन में वस्त्रों-आभूषणों, घर या दुकानों की सजावट नहीं की जाए, तो क्या यह संसार फीका नहीं लगेगा?

जो हमारे कुछ भी काम नहीं आ सकते, उनके प्रति हमारा व्यवहार ही हमारे असली चरित्र को दर्शाता है।

3. बदलते परिवेश में यदि जमाने के अनुसार फैशन से न चलें, तो लोग हमें आलसी, गरीब या निम्नकोटी का नहीं मानेंगे?
4. सादगी की ऊपरी व निम्न सीमा क्या है?
5. कुछ समय पहले लोग जिसे फैशन मानते थे, क्या वही आज सामान्य वेष-भूषा या सादगी नहीं है? वास्तव में देखा जाय, तो सादगीपूर्ण सौन्दर्य आदर्श और विद्वता का प्रतीक है। उसमें किसी भी प्रकार का बनावटीपन व दिखावा नहीं होता। सादगी उज्ज्वलता का प्रतीक है, जिसमें दिव्यता व समरसता की भावनायें प्रवाहित होती हैं। किसी ने ठीक ही कहा है -

नहीं मोहताज ज़ेवर का
जिसे खुद क़ुदरत ने दी है सुन्दरता,
कि कितना खूबसूरत है
चाँद बिना गहने।

जो व्यक्ति प्रकृति के आकर्षणों से ऊपर उठकर संसार की नश्वरता को देखते हुए त्यागवृत्ति को अपनाकर तथा चमक-दमक और सजधज को धन का अपव्यय और व्यर्थ मानकर सादा जीवन जीता है, उसकी वृत्ति अन्तर्मुखी रहती है। वह सादा रहकर भी सभी के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है। सादगी को कोई गलत अर्थों में नहीं आंका जा सकता। सादगी का अर्थ श्रेष्ठता से है। सादगी का अर्थ यह कदापि नहीं कि हम उल्टे-सुल्टे, फटे व मैले वस्त्र पहनकर ही घूमें या बिना जूते-चप्पल के घर से बाहर निकल जायें, बल्कि समय, स्थान और कार्यक्रमों के अनुसार वस्त्रों-गहनों आदि का उचित चयन तो अच्छी सूझबूझ का परिचायक है। सादगी का अर्थ फैशन और दिखावे की होड़ में निचली फूहड़ता और निर्लज्जता से बचने में है। नहीं तो सामने तो लोग ज़रूर आपकी प्रशंसा करेंगे, लेकिन बाद में वही लोग आपको मज़ाक का पिटारा बनाकर खूब हँसते हैं और दूसरों को भी इसमें शामिल कर लेते हैं।

जीवन का ध्येय सुख, शान्ति, आनन्द की प्राप्ति करना है। भौतिक सुखों की दौड़ और होड़ में मनुष्य नैतिक, अनैतिक कोई भी कार्य करने को तैयार हो जाता है क्योंकि इच्छाओं को रोक पाना अब बस में नहीं रहा। फिजूलखर्ची में धन का सबसे ज़्यादा अपव्यय होता है। कई लोग फैशन और दिखावे के इतने अधिक शौकीन होते हैं, जो अनावश्यक चीज़ों से घर भर लेते हैं। कई तो मित्रों की महफिल लगाने और विभिन्न व्यंजनों का लुत्फ उठाते रहने में ही अपना सारा समय और पैसा बर्बाद करते

सुनना, फिर समझना और तब बोलना एक महत्त्वपूर्ण आदत है।
क्यों न यह आदत हम भी डाल लें।

रहते हैं। वे दोस्त समय पर कभी काम नहीं आते, बल्कि पैसा ख़त्म हो जाने पर अंगूठा दिखाकर मुँह फेर लेते हैं। अत: जो व्यर्थ में इस तरह अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं, उन्हें समय की नाजुकता को देखते हुए तुरन्त संभल जाना चाहिये।

फूलों की महक मन को ख़ुशियों से भर देती है। उनमें प्राकृतिक सुन्दरता है। उसी तरह मनुष्य के अन्दर भी झाँक कर देखा जाए, तो उसमें भी विशिष्ट गुणों की आकर्षक महक छुपी हुई है, जिसका नाम है - प्रसन्नता, नम्रता, धैर्य, मधुरता, सहनशीलता। इसका विकास करके वातावरण को सुखमय बनाया जा सकता है। सादगी अपने साथ सुन्दरता लाती है, जिससे ख़ुशी मिलती है। धन का अपव्यय न होने से व्यर्थ की चिन्तायें, तनाव, अवसाद से बचा जा सकता है। व्यसनों से छुटकारा स्वतः ही हो जाता है। इससे आपस में मैत्रीभाव बढ़ जाता है। इसीलिये कहा गया है - सादा जीवन उच्च विचार, यही है मानव का श्रृंगार।

वर्तमान समय वातावरण बिलकुल निकृष्टता की ओर पहुँच चुका है। जितनी भौतिक सुख-समृद्धियों में वृद्धि हुई है, उतना ही मनुष्य का नैतिक स्तर गर्त में डूबा जा रहा है। टी.वी., समाचार-पत्रों में चोरी, हिंसा, मारपीट, बलात्कार जैसी घटनाओं को सुन-सुनकर प्राणी भयभीत हो चुका है। दिल से एक ही आवाज़ आती है, अब क्या होगा? और इसी डर से अब उनका घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया है। ऐसे में शारीरिक सौन्दर्य और दिखावा, वासनाओं को भड़काने में, आग में और अधिक ईंधन डालने का कार्य करेगा। सादा जीवन रक्षा-सूत्र है, इसे कभी भी नहीं छोड़ना। जहाँ सादा जीवन होगा, वहाँ परिवारों में बहुत सारे लाभ दिखाई देंगे। घर में स्नेह-प्यार और ख़ुशियों का साम्राज्य होगा। तनावरहित परिवार बनेगा। सब में आपसी सहयोग देने व लेने की भावनायें जागृत होंगी। सभी सन्तुष्ट, शान्त व गम्भीर होंगे। शुद्ध आहारी होंगे। आध्यात्मिक जागृति आयेगी। फ़िज़ूलखर्ची और अपव्यय से बचत होगी। अत: सादगी में ही सम्पन्नता है। इस बात पर महीनता से विचार करके अपने दृष्टिकोण और शैली में बदलाव लाना ही सफल जीवन का परिचायक होगा।

– श्रीमती निर्मला (शुजालपुर मण्डी)

भूतकाल की बातों से दु:खी होने की बजाय, उनसे शिक्षा लेने की कला सीखकर हम वर्तमान का सदुपयोग कर सकते हैं।

जब हम अपने दिमाग़ को शिक्षित करते हैं, तब अपने दिल को भी शिक्षित करने का ध्यान रखें, क्योंकि संसार को अच्छे विचारों के साथ अच्छे दिलों की बहुत ज़रूरत है।

दो राहें एवं दो परिवारों की कहानी

एक छोटे से शहर में दो प्रसिद्ध स्कूल थे –

1. **सत्यम विद्यालय** – जहाँ शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी का भी भरपूर पाठ पढ़ाया जाता था।
2. **प्रगति एकेडमी** – जहाँ मुख्य ध्यान केवल अकादमिक उत्कृष्टता और प्रतिस्पर्धात्मक सफलता पर था और मूल्य, संवेदना या सामाजिक उत्तदायित्व की ओर ध्यान कम दिया जाता था।

अब आइए जानते हैं दो परिवारों की कहानी –

1. **पहला परिवार- राघव परिवार।** – इस परिवार में पिता महेश, माता सीमा और उनका बेटा अर्जुन रहता था। महेश और सीमा मानते थे कि शिक्षा का असली उद्देश्य बच्चों में गुण और संस्कारों का विकास करना है। इसलिए उन्होंने अर्जुन को सत्यम विद्यालय में दाखिला दिलाया।

सत्यम विद्यालय में अर्जुन को न केवल गणित, विज्ञान, और साहित्य का ज्ञान दिया जाता था, बल्कि उसे नैतिकता, ईमानदारी, सहानुभूति और सामाजिक सेवा के मूल्य भी सिखाए जाते थे। स्कूल में आयोजित वृक्षारोपण, वृद्धाश्रम भ्रमण और समाज सेवा के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने से अर्जुन के दिल में समाज के प्रति दायित्व की भावना प्रबल हुई। उसके शिक्षक अक्सर कहते थे – 'सच्ची सफलता वही है जो दूसरों के जीवन में भी रोशनी बिखेर दे।'

समय के साथ, अर्जुन ने अपने शिक्षकों के सन्देश को आत्मसात् किया और एक कुशल डॉक्टर बना। डॉक्टर बनने के बाद उसने अपने गाँव में एक निःशुल्क चिकित्सा केन्द्र की स्थापना, जहाँ गरीब और ज़रूरतमन्द लोगों का मुफ्त में इलाज मिलता था। अर्जुन की मेहनत और संवेदनशीलता ने उसे न केवल पेशेवर सफलता दिलाई, बल्कि समाज में भी उसकी गहरी सराहना हुई।

2. **दूसरा परिवार- शर्मा परिवार।** – इस परिवार में पिता राजेश, माता कविता और उनकी बेटी नेहा रहती थी। राजेश का मानना था कि जीवन में सफलता का मुख्य मापदण्ड उच्च शिक्षा, बड़ी नौकरी और आर्थिक समृद्धि है। इसी सोच के साथ उन्होंने नेहा को प्रगति एकेडमी में दाखिला दिया।

प्रगति एकेडमी में नेहा को कठिन प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में उच्चतम अंकों की ओर प्रेरित किया जाता था। यहाँ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था- परीक्षाओं में

आओ, स्वयं के सुधार पर इतना समय व ध्यान दें कि हमारे पास दूसरों की आलोचना के लिए समय ही न बचे।

टॉप करना, बड़े कॉलेज में दाखिला पाना और अन्ततः एक उच्च वेतन वाली नौकरी हासिल करना। नेहा ने इस दबाव में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और जल्द ही एक प्रमुख कॉर्पोरेट कम्पनी में ऊँचा पद प्राप्त कर लिया।

लेकिन तेजी से बढ़ती आर्थिक सफलता के साथ-साथ नेहा के जीवन में एक खालीपन-सा छा गया। जहाँ उसके दिन पूरी तरह से मीटिंग्स, डेडलाइन और लाभ के लिए योजना बनाने में बीतते थे, वहीं उसके दिल में उन मूल्यों की जगह नहीं थी, जो कभी उसके परिवार में चर्चा का विषय रहते थे। धीरे-धीरे नेहा अपने परिवार और दोस्तों से दूर होती चली गई और उसने अपने जीवन का उद्‌देश्य केवल पैसों की दौड़ में ही ढूँढ लिया।

निष्कर्ष - दो परिवारों की यह कहानी हमें यह सन्देश देती है कि शिक्षा सिर्फ़ किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए।

1. राघव परिवार में अर्जुन ने संस्कार, सहानुभूति और समाज सेवा के साथ अपना जीवन संवारते हुए न केवल व्यक्तिगत सफलता पायी, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाया।
2. वहीं शर्मा परिवार की नेहा ने केवल अकादमिक उत्कृष्टता और धन की दौड़ में इतना खो दिया कि अन्ततः उसे आन्तरिक सन्तोष और मानवीय रिश्तों की कमी महसूस होने लगी।

असली सफलता वही है जिसमें ज्ञान और संस्कार का सन्तुलन हो। जिससे न केवल व्यक्ति का जीवन समृद्ध होता है, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक परिवर्तन की लहर दौड़ जाती है।

- राजेश रामानी

महत्त्वपूर्ण काम

जो काम आप अपने लिए करते हो, वे आपके यहाँ से जाने के साथ ख़त्म हो जाते हैं। लेकिन, जो काम आप सेवाभाव से दूसरों के लिए करते हो, वे आपके इस संसार को छोड़ने के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं।

आओ, विचार करें कि कौन से कामों को ज़्यादा महत्त्व दिया करें।

अच्छे लोगों की परीक्षा मत लें। वे तो पारे की भाँति होते हैं, आपके चोट करने से टूटते नहीं, बल्कि चुपचाप आपके जीवन से फिसल जाते हैं।

भजन

जीवन का द्वार खुल जाये, यही है कामना मेरी।
तुम्हारे चरणों में रहूँ मैं, यही है कामना मेरी।।
मेरी ये वासनाऐं और मेरी ये कामनाऐं जो,
जो मुझे जीने नहीं देती, मेरी उत्तेजनाएं जो;
करो इनसे निस्तारा, यही है कामना मेरी।
मेरे अन्दर मेरे बाहर शत्रु करते मेरी हानि जो,
पाऊँ किसी विधि उन पर जय करते हैं आनाकानी जो;
तुम्हारी शक्ति मिल जाये, यही है कामना मेरी।
तुम्हारी ज्योति बिना मेरा भला कुछ हो नहीं सकता,
तुम्हारी शक्ति बिना मेरा पाप कुछ जा नहीं सकता;
तुम्हारी ज्योति मिल जावे, यही है कामना मेरी।
तुम्हारा जीवन निराला है करता रुह में उजाला है,
उजाला कर दो हे भगवन् यही है कामना मेरी;
तुम्हारी शरण में रहूँ, यही है कामना मेरी।
तुम्हारी ज्योति में सतगुरु जी अन्धेरा दूर होता है,
तुम्हारी शक्ति से पापों का मंजर चूर होता है;
तुम्हारे असरों को पाऊँ मैं यही है कामना मेरी।
धर्म दान के दाता हो जीवन विकासकर्ता हो,
जीवन का दान देते हो पतन का नाश करते हो;
बनूँ भिक्षुक तुम्हारे दर की, यही है कामना मेरी।
जीवन का द्वार खुल जाये, यही है कामना मेरी।
तुम्हारे चरणों में रहूँ मैं, यही है कामना मेरी।।

– सुदेश खुराना (लुधियाना)

हम किस पड़ाव पर हैं?

किसी अच्छी बात को ध्यान से सुनने का बहुत महत्त्व है, उससे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण उसे ठीक से समझना है और सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण उसके अनुसार जीना है। आओ, देखें हम किस पड़ाव पर खड़े हैं?

बाहरी सुन्दरता तो आँखों को भाती है, किन्तु भीतरी सुन्दरता व अच्छा व्यवहार दिल को जीत लेता है।

Goodness in Everyday Life

- Prof. S.P. Kanal

Gratitude needs no fresh favours

He came to Delhi as a raw matriculate. He had no technical qualifications. He had come to seek a job. He had his uncle working in a Government press. Through his recommendation, the man in charge gave him chance to learn composing and gave him a job as a compositor.

This boy was intelligent and ambitious. At his own initiative, he joined the Punjab University Camp College and thus combined earning and learning. He did his F.A. then B.A. and he passed M.A. in two subjects with second class.

His new qualification brought him better service position in life. Today he is in a foreign country for further qualifications.

But this boy never forgot the ladder by which he had climbed, nor looked with disdain on it. He was born to gratitude.

On the day this young man left Delhi for London, a friend of his went to the press where he had got his first compositor's job and chanced to meet the man who had given him this humble chance. This man was full of feeling for him. He said, "I had done very little for him. I have done this for a number of young men. But this young man never forgot me. He used to come and see me even after he had left the press service and when I could do no more for him. He saw me even when he had risen in life. Before going abroad he did not forget me in the excitement and involvement of foreign travel. He came to get my blessings." His heart was so touched at this gratitude in the boy that he could speak no more.

Self-love needs no diary to call attention to its self-interest. Gratitude needs no fresh favours to remind itself of its benefactors.

प्रत्येक नया दिन हमें एक और मौक़ा देता है, स्वयं को बदलने का।
आओ, मौक़े का भरपूर लाभ उठायें।

A charitable interpretation

He is the Principal of one of the colleges in Delhi University. There was a gentleman who showed surprise to him that a certain person should have opposed him in the meeting. The Principal at once responded to this statement by a remark like this, “No, And no. He did not oppose me; he opposed my views.”

This charitable interpretation of the Principal reveals a rare emotional maturity and goodwill in him. We generally confuse between opposition to us with opposition to our point of view and grow enmity and hatred in the interpersonal relations. It is uncharitable disposition of us to think that those who are opposed to our stand-point are opposed to us. Such uncharitable interpretations feed our aggressiveness in us and set one against the other.

The Principal, by his charitable interpretation, saved the situation from catching fire of mutual ill-will.

Your Feedback

One of recipient of messages/videos shared writes. Pranaam Sir! Shubh ho!! Don't how, but whenever I am covered with web of self-doubts and insecurity, your insightful lessons and instructive videos serve as a steadfast guide.

Thanks to virtual team of shubh ho. I share these videos with my students and family members. Hope to connect physically with Bhagwan’s learnings.

CA Satender Gupta, Chancellor Haridwar University writes- We saluate your dedication!

Sh. Ajay Goyal, Chancellor, Quantum University, Roorkee writes- Respected Dr. Saheb, The session excelled in its content, purpose and style of delievery. Thank you for making me a part of such elevated insight that shall bring immeasurable benefit to the students. Warmest regards - Ajay Goyal.

कमज़ोर लोग बदला लेते हैं, मज़बूत लोग माफ़ कर देते हैं और समझदार लोग नज़रअन्दाज़ कर देते हैं। आओ, देखें हम क्या कर रहे हैं।

One retired Principal and Sewika writes about latest talk shared today - Simple, interesting, interactive, logical and excellent talk.

An educationist and retired polytechnic principal writes - Your words of wisdom have been a beacon of hope for me during difficult times. Thank you for sharing your knowledge and inspiring me to be a better person. I am grateful for your virtual guidance and look forward to meeting you soon.

Dr. Rajat Agarwal, Professor and Head, Deptt. of Management Studies, IITRoorkee writes - There are many who are not expressing in words but getting benefits which are beyond words, I personally started using Value of Gratitude and understood its importance in our life.

Mrs. Namrata Grover, New Jersey writes- You have touched so many hearts and changed so many lives that you may not be even aware of it. The simplicity and the emotion with which you give a talk always touch the hearts of many. Our good wishes to you for many more successes ahead in future.

Mr. MK Raina, President, Shehjaar Homes, Haridwar writes- These are the testimonials to assure you that your efforts are worthy and touching the receptive hearts.

Wise men talk because they have something to say; fools talk because they have to say something.

- Pluto

Things work out best for those who make the best of how things work out.

- John Wooden

हमारा स्वभाव ही हमारा भविष्य है।

देव जीवन की झलक

....गतांक से आगे

विपद और संकट में अद्वितीय साहस और संग्राम

भगवान् देवात्मा के जाति ताल्लुक में आकर मैंने अनेक बार देखा है कि वह किसी जन की ओर से किसी मिथ्या व अशुभमूलक क्रिया से जहाँ इतना गहरा आघात पाते हैं कि उनके सिवाए किसी और जन के लिए उसका ठीक अनुमान लगाना भी असम्भव है, वहाँ दूसरी ओर इस प्रकार की नाना दिक्कतों और तकलीफ़ों का जिस हिम्मत के साथ वह मुकाबला करते हैं और किसी हाल में भी सत्य और शुभ के पथ से एक ईंच भर भी इधर-उधर नहीं होते, वह भी उनके देवरूप के अद्वितीय विशेषता व महानता है। उनकी इस अद्वितीय विशेषता व महानता को प्रकट करने वाली यूँ तो मैंने सैकड़ों घटनाएं अपनी आँखों से देखी हैं, परन्तु जिन घटनाओं का मेरे दिल पर बहुत असर हुआ है और जो उन घटनाओं के बाद भी अनेक बार मेरे सामने आकर मुझे विवश उनके श्री चरणों में झुका देती हैं और जिनसे मुझे सत्यधर्म पथ की नाना मुशकिलात का हिम्मत के साथ मुकाबला करने और हर हाल में सत्य धर्म और सत्य धर्मदाता के लिए सच्चा रहने में विशेष मदद मिलती है उनमें से नमूने के तौर पर कुछ ये हैं -

1. .... को जब उसकी बहुत बुरी कार्रवाईयों के कारण देवसमाज के नाना पदों से अलग किया गया, तब उन्होंने पर्वताश्रम सोलन से रवानगी के समय इस प्रकार की धमकी दी थी कि खबरदार मेरे विरुद्ध सामाजिक पत्रों आदि में कुछ न लिखा जावे। यदि कुछ लिखा गया तो फिर मैं भी अपनी तरफ से वे बातें प्रकट करूँगा व लिखूँगा कि जिन्हें सुनकर व पढ़कर भगवान् के हृदय पर बहुत सदमें लगेंगे। इस बात का जब भगवान् को पता लगा, तब उन्होंने खूब जोश से भरकर उसे यह कहा कि हम तो तुम्हारे खिलाफ कुछ लिखेंगे या न लिखेंगे उसकी बाबत तो देखा जाएगा। तुम्हारा जो जी चाहे तुम लिखना।
2. सन 1913 ई. में जब एक बार श्रीमान्.......लाहौर से सोलन यह दुःखदाई खबरें सुनाने के लिए पहुँचे कि .... ने लाहौर में भगवान् देवात्मा और देवसमाज के सम्बन्ध में शरारत और झूठ पर आधारित मुखालफ़त करनी शुरू कर दी है और दूसरे भगवान् का एक महा कृतघ्न बेटा उनके साथ जा मिला और तीसरे पीपलज़ और अमृतसर आदि के कई बैंक फेल हो गए हैं कि जिनमें भगवान् और समाज के हज़ारों रुपये जमा थे और उसमें से अब बहुत थोड़े रुपये वापस मिलने की आशा है, तब यह महा दुःखदाई और महा हानिकारक समाचार सुनकर हितस्वरूप भगवान्

मृदु वाणी, साफ़ दिल, शान्त निगाह, एकाग्र मन और संकल्पित
निर्णय जीवन में सदा जीत दिलवाते हैं।

देवात्मा के अति कोमल और परम पवित्र हृदय में जो गहरा आघात लगा, वह बेशक अवर्णनीय है, परन्तु इस गहरे आघात को पाकर भगवान् ने किसी तरह भी हिम्मत नहीं हारी और धन और सन्तान अनुरागी अन्य जनों की तरह हवास बाखता नहीं हुए, बल्कि अपने जीवनव्रत की सिद्धि का महा कठिन काम और भी ज़्यादा आत्म-त्याग के साथ पूरा करने के लिए तत्पर हो गए। उस दिन डाक सुनने और प्रूफ देखने आदि के जो-जो काम थे, जहाँ उन्होंने वे सब काम भली-भाँति पूरे किए, वहाँ पूजनीया जी को फ़रमाया कि अब हमें निज के खर्चो को और भी कम करने की ज़रूरत होगी। चुनांचे उसके बाद भगवान् ने घोड़े गाड़ी और नौकर चाकर आदि के कई खर्चो को जो उनकी सेहत के लिए बहुत ज़रूरी थे, बहुत कम कर दिया और ....और अपने महाकृतघ्न बेटे की महा नीच कार्रवाईयों का भी बहुत बड़ी हिम्मत के साथ मुकाबला करने को तैयार हो गए।

3. लाहौर में सख्त गर्मी पड़ रही है और भगवान् सोलन में विराजमान रहते हैं। परन्तु जब यह मालूम हुआ कि लाहौर में ......ने झूठा मुकदमा दायर करके देवसमाज की तरह-तरह से हानि करने का बीड़ा उठाया है, तब भगवान् अपनी सेहत की कुछ परवाह न करते हुए सोलन से लाहौर पहुँच गए। और जब कुछ कर्मचारियों ने भगवान् की सेवा में यह अर्ज किया कि इस मौसम में आपका लाहौर जाना आपकी सेहत के लिए बहुत खतरनाक मालूम होता है, तब भगवान् ने फ़रमाया कि जैसे बैरूनी किसी लड़ाई में उस फ़ौज का जरनैल मैदान जंग से पीछे नहीं रह सकता, वैसे ही हम उस मैदान से परे नहीं रह सकते। लाहौर पहुँचकर हम जीयें या मरें, परन्तु वहाँ पहुँचकर हम उसकी महा पिशाच कार्यवाहियों के महा हानिकारक असरों को मिटाने के लिए जो कुछ उचित उपाए कर सकते हैं, वह अवश्य करेंगे। चुनांचे उस साल की अत्यन्त सख्त गर्मी के दिनों में भगवान् ने अपनी सेहत को जिस तरह कुर्बान करके ....की महा दुष्ट क्रियाओं का मुकाबला किया, उसे देख-देखकर बहुत बड़ी हैरानी होती थी।

4. ..... के देवसमाज से निकाले जाने के बाद जब कितने ही बहुत कमज़ोर और रद्दी फितरत के सेवकों ने भगवान् और समाज को छोड़कर उनका साथ देना शुरू किया, तब भगवान् ने ऐसे लोगों के भाग जाने की केवल यही नहीं कि कुछ परवाह नहीं की, बल्कि ख़ुल्लमखुल्ला यह फ़रमाया कि जो-जो जन .....के साथ जाकर मिलना चाहते हैं, वे सब फ़ौरन देवसमाज से निकल जाएं और उनके साथ जा मिलें।

5. भगवान् ने औरों को छोड़कर अपने कई कृतघ्न बच्चों की ओर से भी बहुत गहरे

लोग हमें तभी सम्मान देते हैं, जब हमारे पास ताक़त हो या हमारा सहायता करने वाला व्यवहार हो, पहला सम्मान अस्थायी है और दूसरा स्थायी।
चुनाव हमें ही करना है।

सदमें खाए हैं, उनके सदमों से एक-एक बार बिन पानी मछली की न्याईं तड़पे हैं परन्तु उन्होंने उनकी नीच प्रकृति का कभी और किसी हाल में भी साथ नहीं दिया। भगवान् अपनी कन्या विकास देवी की बचपन की कई अच्छी गतियों से बहुत प्रसन्न थे। परन्तु जब उसने कपटता और कई प्रकार की नीचता की चालें चलनी शुरू कीं, तब भगवान् ने उसे घर से निकालने में किसी प्रकार की बदनामी आदि की कुछ परवाह नहीं की और उसके साथ पहले प्यार की बिना पर उसकी किसी नीच गति का कुछ भी साथ नहीं दिया।

6. महाकृतघ्न ....ने रुपये के लालच व द्वेष आदि महा नीच भावों से भरकर और भगवान् के विरोधियों के बुरे इशारों पर चलकर जब भगवान् पर झूठा मुकदमा खड़ा किया, तब भगवान् को उस झूठे मुकदमें में फतह पाने के लिए गो बहुत-सा माली और जिस्मानी नुक़्सान उठाना पड़ा और कई प्रकार का बहुत गहरा संग्राम करना पड़ा, परन्तु उन्होंने मिथ्या और अशुभ का किसी तरह भी साथ नहीं दिया।

7. हित स्वरूप भगवान् अपने अथाह हित अनुराग से परिचालित होकर जो हमारे हित के लिए अनेक बार हद से ज़्यादा काम कर जाते हैं और उसके कारण उनके शरीर को बहुत बड़ी हानि पहुँचती है या कसरत से सामाजिक जनों व अन्य जनों की नीच गतियों से उनके देव हृदय पर जो गहरे आघात लगते रहते हैं और उन आघातों से उनके शरीर को बहुत बड़ी हानि पहुँचती रहती है, और कई बार महीनों लगातार बहुत बड़े दु:खों और मुसीबतों में से गुजरते रहे हैं, उसके कई दर्दनाक नजारे मुझे अपनी आँखों से देखने का अवसर मिला है। ऐसे दु:खदाई नज़ारों के पैदा होने पर हितस्वरूप भगवान् जिस हिम्मत के साथ अपनी असहाय तकलीफों को बर्दाश्त करते रहे हैं और निहायत गहरे से गहरे अज़ाब के समय में भी अपने अद्वितीय जीवनव्रत के लिए सच्चे रहे हैं, उसके नाना दृश्यों ने मेरे दिल पर बहुत गहरा असर किया है। कई बार मैंने ऐसा देखा है कि वह प्राय: सारी रात खाँसी व डकारों की तकलीफ से बिना पानी मछली की न्याई तड़पते रहे हैं और फिर भी 4 बजे प्रात: अपनी मंगलकामना आदि का विशेष साधन करने के लिए बैठ गए हैं। भगवान् को बीमारी में भी उनका यही जी चाहता रहता है कि हम औरों के हित के लिए कुछ कर दें।

8. उपर्युक्त घटनाओं के भिन्न सन् 1911 ई. से पहले की भी मेरी आँखों देखी जिन घटनाओं का मेरे दिल पर बहुत गहरा असर है और जिनकी याद से मुझे ज़िन्दगी की मुश्किलात का मुकाबला करने के लिए बहुत बड़ी हिम्मत मिलती है। उनमें से दो-तीन

आओ, असफलताओं की चिन्ता न करें, लेकिन इस बात पर अवश्य विचार करें कि हम कितने मौक़े गवां देते हैं, जब हम प्रयास ही नहीं करते।

ये हैं –

फरवरी, सन् 1893 ई. में समाज के महोत्सव के शुभ अवसर पर कितने ही गुण्डे आदमियों ने देवाश्रम में पहुँचकर पब्लिक सभाओं में जो विघ्न उत्पन्न किए थे, लालटैनों को तोड़ा था, ईटों की वर्षा की थी, साईन बोर्ड जला दिया था और एक कर्मचारी का लाठी से सिर फोड़ दिया था, उस समय भगवान् देवात्मा ने इस सारी पिशाच लीला का जिस हिम्मत के साथ मुकाबला किया था और आगे उनकी शरारतमूलक ऐसी कार्यवाहियों को बन्द करने के लिए जो-जो उचित यत्न किए थे, उसकी याद मेरे दिल पर अजीब उच्च असर डालती है।

सन् 1893 ई. तक भगवान् देवात्मा इकट्ठी ही कई तरह की बहुत बड़ी मुसीबतों में फँसे रहे हैं, यथा –

(i) उन दिनों कई फौजदारी और दीवानी मुकदमात जारी थे।

(ii) आर्थिक विचार से बहुत बड़ी मुसीबतों का सामना था, चुनांचे मामूली ज़रूरतें पूरी करने के लिए भी घर का कितना असबाब बेच देना पड़ा और देवाश्रम के अच्छे मकानों को किराये पर देकर मुंटगुमरी के एक कच्चे मकान में जाकर रहना पड़ा। जीवन प्रेस को बन्द करके उसका सामान बेचना पड़ा और अपने एक होनहार पुत्र की उच्च शिक्षा छुड़ानी पड़ी।

(iii) श्रद्धेया कुमारी प्रेमदेवी जी का तपेदिक की बीमारी से देहान्त हो गया।

(iv) ईश्वर पर जो गहरा विश्वास था, वह विश्वास चला गया।

(v) ईश्वर विश्वास के चले जाने से आम लोगों को मुखालिफत करने के लिए जो नया हथियार मिल गया, उसे छोड़कर कुछ पुराने सेवकों व कर्मचारियों की हालत भी डाँवाडोल हो गई।

(vi) शारीरिक सेहत का बहुत बुरा हाल था। बाज दफा दमकशी की इतनी गहरी तकलीफ होती थी कि न बैठा जाता था और न लेटा जाता था। और इस हालत में अपना समय व्यतीत करना निहायत दूभर हो रहा था।

इन अत्यन्त प्रतिकूल हालात के समय भगवान् के दिल में नाना प्रकार से जो गहरे तीर लगते थे, उनका जरा-सा ख्याल आने से भी एक-एक बार दिल काँप जाता है। परन्तु भगवान् ने ऐसी असीम दिक्कतों के समय में भी अपने अद्वितीय जीवनव्रत की सिद्धि के मार्ग से कभी एक कदम भी पीछे हटना गवारा नहीं किया। अर्थात् किसी हाल में भी अशुभ और मिथ्या का साथ देकर अपनी किसी मुसीबत को कम करने की

यदि आज हम सेहत के लिए समय नहीं निकाल रहे, तो समझो कल की बीमारी के लिए समय बचा रहे हैं। आओ, शरीर, धन व आत्मा पर बराबर ध्यान दें।

कोई चेष्ठा नहीं की।

(vii) सन् 1893 ई. तक नेचर पर आधारित विज्ञानमूलक धर्म की खोज में भगवान् ने जो अद्वितीय तप किया है, उसका दृष्टान्त भी पूर्णतः अद्वितीय है। अतएव भगवान देवात्मा अपने अद्वितीय जीवनव्रत की सिद्धि के मार्ग में उपर्युक्त प्रकार की जिन अद्वितीय मुसीबतों से गुजरते रहे हैं, उन्हें सामने लाकर मुझे जहाँ एक तरफ उनके प्रकट किये हुए सच्चे धर्म मार्ग पर चलने की अपनी नाना मुश्किलात उनकी तुलना में किसी भी गिनती व हैसियत की नहीं मालूम होती, वहाँ उन मुशकिलात में से गुजरने के लिए और गिरते-पड़ते और हर हाल में भगवान् देवात्मा की ओर ही अपना मुँह रखने और अपनी नाना कठिनाइयों और निराशाओं पर जय लाभ करने में ऐसी मदद मिलती और ऐसा उत्साह प्राप्त होता है कि जिसे मैं किसी तरह भी शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता।

काश! कि मैं अपने जीवन की इस राह पर सदा आरूढ़ रह सकूँ और हर हाल में भगवान् का पूरा वफादार और अनुगत शिष्य प्रमाणित हो सकूँ।

(सेवक खण्ड 18, संख्या 5, 1926)

भोपाल केन्द्र समाचार

श्री राजेश रामानी जी ने सपरिवार दो दिन की नर्मदापुरम की यात्रा की। इस दौरान शासकीय माध्यमिक विद्यालय, बम्मन गाँव, जिला नर्मदापुरम (मध्य प्रदेश) भोपाल से 100 किलोमीटर दूर स्कूल में 30 बच्चों और टीचर्स को उच्च जीवन के विषय में वर्कशॉप करवाई। वहाँ कैलाश गौर जी के परिवार में 'परिवार के सम्बन्धों' पर साधन करवाया गया। पाँच बच्चों समेत परिवार के 15 जनों ने लाभ लिया।

26 जनवरी, 2025 को माता-पिता सन्तान दिवस को उत्सव की तरह टहिलरामानी जी के परिवार द्वारा उनके निवास (भोपाल) पर 5 से 6 बजे तक आयोजित किया गया। साधन श्री राजेश रामानी जी ने करवाया।

जिसमें सभी सम्माननीय मित्रों और उनके परिवार जनों ने सम्बन्धों में प्रगाढ़ता एवं सद्भाव बनाने की समझ को बढ़ाने का अवसर पाया तथा विभिन्न सोलह सम्बन्धों के महत्त्व को भी जाना।

जीवन में हर कोई ख़ुशी चाहता है, दुःख कोई नहीं चाहता। परन्तु, स्मरण रहे कि हम इन्द्रधनुष को बिना बारिश के कभी प्राप्त नहीं कर सकते।

पशु एवं वनस्पति जगत् के परलोक सम्बन्धी तत्त्व

(26 जनवरी, 2002)

प्रश्न – पशु और वनस्पति जगतों के सम्बन्ध में परलोक के नियम क्या हैं? कौन से अच्छे, पशु या पौधे हैं, जिन्हें परलोक में प्रवेश मिलता है?

उपदेश – चलो, देखें वनस्पति (उद्भिद्) जगत् और पशु जगत् के परलोक सम्बन्धी तत्त्व। एक बार इस बारे में पहले भी बात कर चुके हैं, आज आगे देखते हैं। वनस्पति जगत् में आत्मा विकास के प्रारम्भिक स्तर पर ही है। पशु जगत् की आत्मा उससे थोड़ी अधिक विकसित है और मनुष्य जगत् की आत्मा सबसे ज़्यादा विकसित हुई है।

अब आत्मा तो भावों पर चलती है, उच्च या नीच भावों से उसका उत्थान या पतन होता है। मनुष्यों का दिल-ओ-दिमाग़ काफ़ी विकसित है। और इसलिए इस स्तर के भाव हमें आसानी से समझ में आते हैं। कोई मनुष्य स्वार्थी होता है, छल-कपट करता है, चोरी-चकारी करता है, तो ऐसे में उसकी आत्मा का नाश होता है। इसके विपरीत, यदि कोई मनुष्य स्वहित से ऊपर होता है, निःस्वार्थ सेवाकारी होता है, दान करता है, परोपकार करता है, तो उसकी आत्मा में ज़्यादा आत्मिक पूँजी होती है और वह ज़्यादा उच्च लोक में प्रवेश पाती है। अब, अच्छा या ख़राब आचरण सदैव तुलनात्मक होता है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप किनके बीच में हो और कितना अच्छा कार्य आपने किया। ऑस्कर शिंडलर एक जर्मन मुनाफ़ाखोर व्यापारी था। साथ ही व्यभिचारी और कई तरह से दुर्गुणी था। परन्तु उसने नाज़ियों के कत्ले-आम से अनेक यहूदियों को बचाया। अतः इतना दुर्व्यसनी होने पर भी अपने स्तर और क्षमता वाले लोगों से परलोक में उसकी स्थिति कहीं बेहतर रही। जैसे हर इन्सान के पास इतना धन तो नहीं होता कि वह किसी यूनिवर्सिटी को अनुदान दे या कोई अस्पताल या स्कूल वगैरह खोल सके, परन्तु यह सब तुलनात्मक रहता है। आप कितना करने में सक्षम हो और वास्तव में कितना करते हो, इस आधार पर आत्मा का स्तर निर्धारित होता है।

एक आम आदमी यदि साल में एक हज़ार डॉलर दान में देता है, तो यह एक अमीर व्यक्ति द्वारा दान में दिए गए हज़ार डॉलर के बराबर नहीं होगा, क्योंकि वह अमीर व्यक्ति आसानी से दस हज़ार डॉलर या उससे अधिक भी दे सकता है। अतः एक

ख़ुशी का रहस्य यह है कि हम जीवन में जिस भी स्तर पर हैं, उसे स्वीकार करना सीखें तथा प्रत्येक दिन अपने जीवन से बेहतरीन फल पैदा करें।

अमीर व्यक्ति को समान स्तर का लाभ पाने के लिए गरीब व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक देना होगा। समझे?

तो, इसी तरह पशुओं और पौधों वगैरह में भी आत्मा की तुलनात्मक अच्छाई की परख होती है। अब शेर-चीते स्वभाव से ही मांसभक्षी हैं, तो ऐसे में दूसरे जानवरों को मारने से उनकी आत्मा का इतना पतन नहीं होता। परन्तु, कुछ शेर-चीते ज़्यादा आक्रामक होते हैं। भूख न हो, तो भी जानवरों को मारते हैं और थोड़ा-सा खाकर छोड़ देते हैं। या जो अल्फा-नर होते हैं, वो जंगल के बहुत बड़े क्षेत्रों पर नियन्त्रण करके वहाँ से बाकी सब नर पशुओं को भगा देते हैं, ताकि अनावश्यक रूप से ही सही, परन्तु मादाओं की बहुत बड़ी संख्या पर उनका नियन्त्रण रहे। तो, ऐसी तुलनात्मक स्थिति में इन जानवरों की आत्मा नीचे के लोक में स्थान पाएगी। इसके विपरीत, शेर होकर भी यदि किसी जानवर ने उदार व्यवहार दिखाया, सिर्फ़ अपनी तुरन्त ज़रूरत जितना शिकार किया, आसपास के दूसरे मांस-भक्षियों से अपने क्षेत्र के जानवरों की रक्षा की, आदि तो ऐसा व्यवहार सराहनीय है और नेचर में उसके इनाम हैं ऐसी आत्माओं के लिए समझे?

ऐसे ही वनस्पति जगत् में भी तुलना करो, तो सब वृक्ष एक जैसे नहीं होते। हालांकि सभी अपने को जीवित रखने की प्रतियोगिता में शामिल हैं, पर कुछ वृक्ष होते हैं, जो ज़रूरत से ज़्यादा पानी खींचकर आसपास के अपने जैसे ही अन्य वृक्षों से संसाधन छीनते हैं। यह तो एक उदाहरण हुआ, पर जैसे-जैसे निम्न स्तर पर विकसित आत्मा को देखेंगे, तो हमारे लिए उनमें फ़र्क़ बताना मुश्किल होगा, किन्तु निश्चिन्त रहो कि उनमें भी अन्तर है और उनके आत्मा भी अपने जैसे अन्य अस्तित्त्वों या अपने क्षेत्र के अन्य वजूदों की तुलना के अनुसार ही स्थान पाते हैं और उदाहरणों के लिए तुम ख़ुद भी शोध करके ढूँढ सकते हो, पर मैं आशा करता हूँ कि मूल सिद्धान्त तुम्हें समझ में आ गया होगा।

– परलोक सन्देश

बेहतरीन पुस्तक

हम चाहें या न चाहें, किन्तु हमारे बच्चों को चरित्र के विषय में जब भी पढ़ना होगा, तो हमारा व्यक्तित्व ही उनके लिए एक बेहतरीन पुस्तक प्रमाणित होगा। क्यों न हम ऐसा जीवन जियें, जिस पर हमारे बच्चे गर्व कर सकें।

अपनी मुसीबतों के बारे में ही बात करते रहना हमारी आदत-सी हो गई है। आओ, इस आदत को छोड़े और जीवन में जो ख़ुशियाँ मिली हैं, क्यों न उनकी ही बात करें।

प्रकृतधर्म का आधार नेचर तत्व

(देवशास्त्र प्रथम खण्ड)

प्रिय मित्रो! 'विज्ञानमूलक सत्यधर्म के प्रवर्तक एवं संस्थापक भगवान् देवात्मा' ने मनुष्य की आत्मा एवं धर्म के विषय में सत्यज्ञान प्रदान करते हुए स्पष्ट किया है कि यदि किसी मनुष्य को उपरोक्त विषय पर सत्यज्ञान प्राप्त करना हो, तो उसके लिए अनिवार्य है कि वह आध्यात्मिक दृष्टि से सृष्टि की कार्यशैली के विषय में बहुत अच्छी तरह सच्चा ज्ञान एवं बोध प्राप्त कर ले। यदि कोई जन ऐसा करने में असफल रहता है, तो उसे 'आत्मा एवं धर्म' का सच्चा ज्ञान तथा बोध कदापि नहीं मिल सकता।

देवात्मा सतगुरु ने विश्व के अनेकों वैज्ञानिकों की अद्वितीय खोजों का गहन अध्ययन करके हम सबके हित के लिए 'देवशास्त्र' प्रथम खण्ड के माध्यम से सृष्टि की परिभाषा, उसके विश्वव्यापी अनेकों सिद्धान्तों अर्थात् नियमों, सृष्टि के लक्ष्य, उसकी कार्यशैली एवं अनेकों विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन किया है, ताकि हम सब इस तत्व का सच्चा एवं स्थाई बोध पा सकें कि हमारी आत्मा के जन्म, सुरक्षा, स्वास्थ्य, सुदृढ़ता एवं अमरता के प्रति सृष्टि की वास्तविक भूमिका कैसी है।

मेरे सुधि मित्रो! पिछले लगभग दो महीनों में देवशास्त्र (प्रथम खण्ड) के गहन अध्ययन से मुझ तुच्छ को इस ग्रन्थ के विषय में जो कुछ समझ आ सका, उस सबको निम्नलिखित प्रश्नों के रूप में हार्दिक कामना के साथ नीचे उद्‌धत कर रहा हूँ कि यह भव्य ज्ञान आपके जीवन में भी आध्यात्मिक समृद्धि लाए।

प्रश्न 1. वह सृष्टि क्या है, जिस पर आत्मज्ञान एवं सत्यधर्म की शिक्षा स्थापित है?

प्रश्न 2. इस धरा पर विविध प्रकार के तथाकथित देवी/देवता कैसे उत्पन्न हुए?

प्रश्न 3. इस पृथ्वी पर तथाकथित धर्ममतों, उनके प्रवर्तकों एवं प्रचारकों की धर्म विषयक अवधारणा क्या-क्या है?

प्रश्न 4. 'विज्ञानमूलक सत्यधर्म प्रवर्तक भगवान् देवात्मा' की मनुष्यात्मा एवं प्रकृतधर्म की मूल शिक्षा एवं उसकी प्राप्ति की विधियाँ क्या हैं?

भगवान् देवात्मा ने सृष्टि अर्थात् नेचर के सत्यरूप का ज्ञान एवं बोध प्रदान करने हेतु हमारे भव्य सौर्य मण्डल का दृष्टान्त देकर सृष्टि के विषय में अनेकों अलौकिक सत्यों को जिन प्रश्नों के माध्यम से स्पष्ट किया है, वह प्रश्न नीचे उद्धत किए जाते हैं। यथा...........

प्रश्न 5. सृष्टि का सत्य, आश्चर्यमय तथा महा विशाल रूप।

सहनशीलता आपमें उच्चतम कोटि की शक्ति है और बदला लेने की भावना कमज़ोरी का पहला लक्षण है। आओ, आत्मबल के धनी बने, कमज़ोर नहीं।

प्रश्न 6. सृष्टि का जड़मय एवं शक्तिमय महान् रूप।
प्रश्न 7. सृष्टि का परिवर्तनशील परन्तु अविनाशी और नित्य रूप।
प्रश्न 8. सृष्टि का पक्षपातरहित तथा पूर्ण विश्वसनीय रूप।
प्रश्न 9. सृष्टि में नए-नए अस्तित्वों के प्रगट होने तथा उनमें श्रेष्ठता एवं उन्नति, पतन तथा विनाश का कार्य।
प्रश्न 10. सृष्टि में पशु जगत् के विकास में मनुष्य का प्रकाश।
प्रश्न 11. सृष्टि में मनुष्य जगत् के विकास में देवात्मा के आविर्भूत होने का ज्ञान।
प्रश्न 12. धर्म की दृष्टि से सृष्टि के विषय में स्मरण रखने योग्य बड़े-बड़े 16 विश्वव्यापी सत्य सिद्धान्त।

मेरे सुधि मित्रो! उपरोक्त तब प्रश्नों के विज्ञान-सम्मत एवं सारगर्भित उत्तर भगवान् देवात्मा के अनेकों ग्रंथों में और विशेषत: 'देवशास्त्र प्रथम खण्ड' बहुत सुन्दर रूप में दिए गए हैं। यदि कोई सुपात्र जन ऐसे अनेकों प्रश्नों का ठीक-ठीक जान प्राप्त करना चाहे, तो उसे देवात्मा की भव्य शिक्षा के साथ हार्दिक भावों से जुड़ना चाहिए।

प्रकृतधर्म का आधार सत्य और मिथ्या तत्व

(देवशास्त्र द्वितीय खण्ड)

प्रिय मित्रो! 'मनुष्य' सृष्टि अर्थात् नेचर में सबसे विकसित प्रजाति का सदस्य है, क्योंकि इसके पूर्ण गठनयुक्त सब अंगों से सुसज्जित भौतिक शरीर तथा उन्नतशील बुद्धि शक्ति है, जिनकी सहायता से मनुष्य ने अपने लिए अनेकों प्रकार की सुख-सुविधाओं का सृजन कर लिया है।

लेकिन सबसे विकसित प्रजाति के सदस्य अर्थात् मनुष्य अपनी उच्चतम अवस्था पाने में असमर्थ हो रहा है। साथ ही उसको अपने मूल हित का न तो लेशमात्र ज्ञान व बोध है और न ही इसके प्रति ज्ञान और बोध पाने की इसमें कोई आकांक्षा ही है। इसीलिए मनुष्य गहरे आत्म अन्धकार में बुरी तरह ग्रस्त भी है। ऐसी भयानक अन्धकारमय अवस्था रखकर मनुष्य का जीवन बहुत दु:खदाई अवस्था में रहकर एवं दारूण दु:ख सहते-सहते आत्मिक मृत्यु के मुख में जाने हेतु अभिशप्त है।

मित्रो! सृष्टि में सदा सत्य का राज्य चलता है। अत: प्रत्येक मनुष्य के लिए नितान्त आवश्यक है कि वह अपने जीवन विषयक प्रकृतज्ञान का सच्चा बोध पाने का

जब तक हम दूसरों के बारे में नहीं सोचते और उनके लिए कुछ नहीं करते हैं, तब तक हम खुशियों के सबसे बड़े स्त्रोत को गँवाते रहते हैं।

गहन प्रयास करे, अन्यथा विश्व से सदा-सदा के लिए नष्ट होने हेतु तैयार रहे। यही मनुष्यमात्र का मूल हित है।

दोस्तो! विज्ञानमूलक सत्यधर्म प्रवर्तक एवं संस्थापक भगवान् देवात्मा ने मनुष्य की आत्मा एवं धर्म के विषय में प्रकृति के आधार पर 'सत्य और मिथ्या तत्व' विषयक ज्ञान प्रदान करते हुए स्पष्ट किया है कि प्रत्येक मनुष्य के लिए उपरोक्त विषय पर सत्यज्ञान तथा बोध प्राप्त करना अनिवार्य है। अर्थात् यदि कोई जन आध्यात्मिक दृष्टि से 'सत्य एवं मिथ्या तत्व' विषयक प्रकृतज्ञान के प्रति अच्छी तरह से समझ नहीं रखता या यह सत्यज्ञान पाने की कोई आकांक्षा व योग्यता नहीं रखता या इस विषय में प्रकृत सत्य समझने में असफल रहता है, तो उसे 'आत्मा एवं धर्म' का सच्चा ज्ञान तथा बोध कदापि नहीं हो सकता।

देवात्मा ने मानवता के सच्चे कल्याण हेतु 'देवशास्त्र' द्वितीय खण्ड के माध्यम से 'सत्य और मिथ्या तत्व' विषयक अमूल्य ज्ञान प्रदान करने की बड़ी कृपा है। मुझ तुच्छ को 'देवशास्त्र' द्वितीय खण्ड का अध्ययन करने से धर्म विषयक प्रकृतज्ञान जो कुछ थोड़ा-सा समझ आया है, वह आप सबकी सेवा में विविध प्रश्नों के माध्यम से नीचे उद्धत करने का प्रयास करता हूँ। इन प्रश्नों तथा ऐसे अन्य कितने ही प्रश्नों के उत्तर का सत्यज्ञान एवं बोध प्राप्त करना प्रत्येक धर्म जिज्ञासु जन के लिए नितान्त आवश्यक है।

मेरे सुधि मित्रो! पिछले महीने से 'देवशास्त्र -द्वितीय खण्ड' के अध्ययन से मुझ तुच्छ को जो कुछ थोड़ा-सा समझ आ सका, उस सबको निम्नलिखित प्रश्नों के रूप में इस हार्दिक कामना के साथ नीचे उद्धत कर रहा हूँ, ताकि इस भव्य ज्ञान के माध्यम से आपके जीवन में भी आध्यात्मिक समृद्धि आ सके।

प्रश्न 1. ज्ञान किसे कहते हैं?
प्रश्न 2. मिथ्या ज्ञान किसे कहते हैं?
प्रश्न 3. सत्यज्ञान किसे कहते है?
प्रश्न 4. विश्वास किसे कहते हैं?
प्रश्न 5. मिथ्या विश्वास किसे कहते हैं?
प्रश्न 6. सत्य विश्वास किसे कहते हैं?
प्रश्न 7. साक्षात ज्ञान किसे कहते हैं?
प्रश्न 8. असाक्षात ज्ञान किसे कहते हैं?

आओ, अपने जीवन को अच्छे भावों व सकारात्मक सोच से इतना उच्च बनाएं,
कि निराश से निराश व्यक्ति भी यदि हमें याद करे,
तो उसकी आँखों में भी चमक आ जाये।

प्रश्न 9. किन-किन विषयों में सत्यज्ञान प्राप्त हो सकता है?

प्रश्न 10. सत्यज्ञान किन-किन शक्तियों के द्वारा मिल सकता है?

प्रश्न 11. किन-किन बोध शक्तियों के द्वारा किसी विषय में बोध हो सकता है।

प्रश्न 12. सत्यज्ञान पाने हेतु क्या परीक्षा विषयक विधि का अनुरागी होना अति आवश्यक है?

प्रश्न 13. वह विविध प्रकार की ज्योतियाँ कौन-कौन सी हैं, जो विविध प्रकार के सत्यों को देखने में सहायक हो सकती हैं?

प्रश्न 14. मनुष्यात्माओं में नाना प्रकार की मिथ्याओं तथा उनकी उत्पत्ति के क्या-क्या कारण है?

प्रश्न 15. प्रत्येक मनुष्य के लिए किसी अन्य मनुष्य पर विश्वास करना अनिवार्य क्यों है?

प्रश्न 16. किसी जन का कौन-सा विश्वास व मत सत्य है, इसकी पहचान कैसे हो सकती है?

प्रश्न 17. सत्यज्ञान एवं बोध प्राप्ति हेतु वह विज्ञानमूलक विधि क्या है, जिसके माध्यम से जाँच-पड़ताल करके सत्य परिणाम उपलब्ध हो सकता है?

मेरे सुधि मित्रो! उपरोक्त सब प्रकार के अनेकों प्रश्नों के विज्ञान-सम्मत एवं सारगर्भित उत्तर भगवान् देवात्मा के अनेकों ग्रंथों में और विशेषत: 'देवशास्त्र द्वितीय खण्ड' में बहुत सुन्दर रूप में दिए गए हैं। यदि कोई सुपात्र जन ऐसे अनेकों प्रश्नों का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त करना चाहे, तो उसे देवात्मा की भव्य शिक्षा के साथ हार्दिक भावों से जुड़ना चाहिए।

– देवधर्मी

शोक समाचार

शोक का विषय है कि हमारे पुराने व क़ीमती धर्मसाथी श्रीमान् मेहर सिंह जी (गाँव मलेका, सिरसा) का 02 फरवरी, 2025 को प्राय: 76 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उनके हृदय पर देव प्रभावों का जादू हुआ था। वह आत्माओं को देवात्मा से जोड़ने की वह गहरी तड़प रखते थे। ऐसे दानी, श्रद्धावान, उत्साही व हानि प्रतिशोध की अग्नि से स्वयं को तपाने वाले आत्मा का परलोक में शुभ हो!

अपनी सोच को कैसे बेहतर बनाया जाए, यह सीखने से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।

साधन एवं उद्‌बोधन सेवा

पिछले दिनों विभिन्न स्थानों एवं अवसरों पर प्रो. नवनीत जी निम्न प्रकार से प्रेरणास्पद उद्‌बोधनों से सेवाकारी प्रमाणित हुए -

सहारनपुर - 12 जनवरी (रविवार) प्रातः 11:00 बजे 104, भगवती कॉलोनी में माता-पिता सन्तान दिवस का साधन रखा गया। प्रो. नवनीत जी एवं सीमा जी साधन करवाने रुड़की से पहुँचे। विकासनगर से श्रीमती सुधा जी अपने सुपुत्र, पुत्रवधु एवं पौत्र के साथ पहुँची तथा वहाँ से डॉ. प्रवेश जी भी आए। बेहट से मनोज चुग जी परिवार सहित आए। स्थानीय श्री प्रदीप शर्मा जी अपने परिवार एवं अपने चाचा जी को परिवार सहित लाए। इसके भिन्न श्रीमान् पटवारी जी के पारिवारिक एवं परिचित जन अच्छी संख्या में शामिल हुए। इस प्रकार इस साधन से एक सौ से ज़्यादा जनों को लाभान्वित होने का अवसर मिला।

साधन दो घण्टे से ऊपर चला तथा देव प्रभावों की अमृत वर्षा से श्रोता नहा रहे थे। साधन के दौरान कुछ समय के लिए तमिलनाडू से रामकृष्ण मठ के दो सन्यासी भी प्रो. संजय पंनसूले (आई.आई.टी. रुड़की) के संग पधारे। परम पूजनीय भगवान् देवात्मा एवं स्वामी विवेकानन्द जी के बीच हुए पत्राचार का हवाला देते हुए दोनों सन्यासियों ने भगवान् देवात्मा जी के चित्र पर फूल चढ़ाए एवं प्रणाम किया। अन्त में सभी ने प्रीतिभोज का आनन्द लिया।

यमुनानगर - 18 जनवरी 2025, स्थानीय MLN College परिसर में स्थित TIMT में MBA/MCA/BBA/BCA के प्रायः 200 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को 90 मिनट तक Achieving Excellence Through Self Management विषय पर सम्बोधित किया। विद्यार्थियों ने एक-एक बात को बहुत ध्यान से सुना तथा बहुल लाभ उठाया। कुछ अध्यापिकाओं ने 600/- पुस्तक खरीद कीं। यह सत्र यूट्यूब पर Shubhho Better Life चैनल पर भी उपलब्ध है।

रुड़की - 24 जनवरी, 2025 को स्थानीय योगी मंगलनाथ सरस्वती विद्या मन्दिर में विद्यार्थियों की नीति शिक्षा करवायी। प्रायः 350 विद्यार्थी एवं शिक्षक लाभान्वित हुए।

यमुनानगर - 25 जनवरी, 2025 को दो परिवारों में विजिट किया। एक परिवार से नवनिर्मित देवाश्रम हेतु एक कमरे के निर्माण हेतु दान मिला। दूसरे परिवार से 2000/- दानस्वरूप मिले। 27 जनवरी, 2025 को आई.आई.टी. रुड़की के

हमें जिन तीन चीज़ों की विशेष संभाल रखनी चाहिए वे हैं - वायदा, मित्रता, व सम्बन्ध, क्योंकि जब ये टूटते हैं, तो शोर नहीं करते, किन्तु सन्नाटा छा जाता है। आइए, इन तीनों की कद्र करें।

MBA Department में चल रहे एक कोर्स के दौरान Self Management विषय पर सम्बोधन दिया। देशभर की प्रतिष्ठित कम्पनियों के तीस मैंनेजर लाभान्वित हुए। 3000/- पुस्तकें विभाग द्वारा उन्हें वितरित की गई।

रुड़की - 29 जनवरी, 2025 को स्थानीय जैन मिलन के कार्यक्रम में उद्‌बोधन हेतु निमन्त्रित किया गया। स्थानीय जैन धर्मशाला में एकत्रित प्राय: 50 जनों को 'अपनों से अपनापन' विषय पर प्रभावशाली सम्बोधन दिया। यह सत्र भी यूट्यूब पर उपलब्ध है। डॉ. पी के साहू, Scientist NIH Roorkee साथ में गए।

- 31 जनवरी, 2025 को देवाश्रम परिसर में वानप्रस्थी जनजागृति अभियान समिति का दसवां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्राय: 70 वाणप्रस्थियों को सारगर्भित एवं प्रभावी उद्‌बोधन दिया। इस अवसर पर 'मेरा जीवन - सार्थक कब और कैसे?' नामक पुस्तक की 100 प्रतियाँ समिति ने अपनी ओर से वितरित कीं।

- 03 फरवरी, 2025 को स्थानीय सिटी पब्लिक इन्टर कॉले में नीति शिक्षा करवाई। प्राय: 300 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। श्री अंकित सिंघल जी साथ में गए।

- 12 फरवरी, 2025 को आई.आई.टी. रुड़की के MBA Department में चल रहे कोर्स के प्रथम दिन प्रो.नवनीत जी ने Sustainable Smile Through Self Management विषय पर पौने दो घण्टे का उद्‌बोधन दिया। यह सत्र प्रो.रजत अग्रवाल जी ने रखवाया। National Institute of Food Technology Enterprenurship and Management, Sonepat से आए 20 MBA के छात्रों ने लाभ उठाया। कुछ विद्यार्थियों ने देवाश्रम भी विजिट किया व हितकर बातचीत से लाभ उठाया। विभाग की ओर से उन्हें 3000/- की पुस्तकें वितरित की गई। यह सत्र Shubhho Better Life YouTube चैनल पर उपलब्ध है।

-15 फरवरी 2025, को रुड़की के निकट स्थित गाँव ताशीपुर में भारतीय एकेडमी के छात्र-छात्राओं को प्रो. नवनीत जी ने My Better Life की वर्कशॉप करवायी। प्राय: 150 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। श्री अंकित सिंघल जी साथ रहे। यह वर्कशॉप सी.ए. हैमन्त अरोड़ा जी ने रखवायी।

हमें सरल, सादा, सात्विक व सेवाकारी जीवन इसलिए नहीं जीना चाहिए कि मरने के बाद स्वर्ग मिले, बल्कि ऐसा जीवन इसलिए जीना चाहिए, ताकि हमारा जीवन जीते जी स्वर्ग जैसा हो जाए।

गोपालपुर से ख़ुशखबरी

रुड़की के निकट 13 कि.मी. की दूरी पर एक अत्यन्त पिछड़ा छोटा-सा गाँव है, गोपालपुर। यहाँ सरकारी मिडल स्कूल में ज़्यादातर भट्ठा मजदूरों के बच्चे पढ़ते हैं। यहाँ तीन अध्यापक हैं, श्री मोहित जी, विनोद जी एवं प्रदीप जी, जोकि अत्यन्त ईमानदार, मेहनती व कर्तव्यनिष्ठ हैं। वे स्कूल को मात्र कार्यस्थल नहीं, बल्कि अपना घर समझते हैं। जो कोई भी इस स्कूल में जाता है, वहाँ के वातावरण को देखकर मोहित हो जाता है। स्कूल में न कोई माली, न चपरासी, न सफाई कर्मचारी है, फिर भी सफाई पूरी, हर कोना साफ़, बागवानी बेहतरीन। आ गये का पूरा सम्मान व आवभगत बच्चे जिस प्रेम से करते है, वह देखने व महसूस करने लायक दृश्य है।

तीन वर्ष पूर्व 2022 से इस विद्यालय में बेटर लाइफ़ की टीम ने विजिट करना शुरू किया। मिशन की ओर से कम्प्यूटर रूम, चार नए सिस्टम, सारे परिसर का जीर्णोद्धार करवाया गया। बच्चों को My Better Life की कापियाँ बनवाई गईं। बच्चों को नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक किया गया। अध्यापकों व बच्चों ने पूरा साथ दिया। हर पक्ष में स्कूल उन्नति करने लगा।

ख़ुशखबरी यह है कि इस वर्ष इस स्कूल के 15 बच्चों ने नेशनल स्कॉलरशिप की परीक्षा दी और इनमें से आठ बच्चों ने इसे पास किया है। अब उन्हें अगले चार वर्ष तक 1000/- प्रतिमाह वजीफा मिलेगा। पूरे हरिद्वार जिले में यह एकमात्र स्कूल है, जिसने ऐसा रिजल्ट दिया है।

08 फरवरी, 2025 को प्रो. नवनीत जी पूरी टीम के साथ स्कूल गए। टीम में प्रो. कमलेश चन्द्रा, प्रो. सोनल अत्रे, श्रीमती रेणु वधवा, अशोक जी वधवा, गीता जी, पूनम जी जैन, सुशील कुमार जी, श्री संजय मित्तल जी, अक्षित रोहिल्ला एवं श्री अंकित सिंघल जी आदि शामिल थे। सभी ने वहाँ जाकर उत्साह लाभा किया। टीम अपने साथ केले, मिठाई व पेन आदि वितरण हेतु ले गई।

प्रो. नवनीत जी ने बच्चों को सुलेख (Handwriting) के टिप्स दिए। फिर बच्चों की नीति शिक्षा करवायी। प्रिंसीपल मोहित जी ने अश्रुपूर्ण आँखों से भाव प्रकाश किया व मिशन द्वारा की जा रही निरन्तर सेवाओं व सहयोग हेतु आभार प्रकट किया। सारा वातावरण भावुक व शुक्रगुजारी के भावों से भरा हुआ था। बच्चों का शुभ हो! शिक्षकों का शुभ हो! विद्यालय का शुभ हो! सहयोगकर्ताओं व मिशन का शुभ हो! सबका शुभ हो!

कितने सौभाग्यवान् हैं वे जन, जो अपने बच्चों को उच्च गुण संस्कार रूप में दे पाते हैं, क्योंकि अपने बच्चों को कणभर संस्कार देना टनभर अनाज दान करने से लाखों गुणा बेहतर है।

उच्च जीवन प्रशिक्षण संस्थान (Better Life) के तत्वाधान में आ गया अनूठा मौक़ा

'रिश्तों में नई रोशनी' पाने का उत्सव

(03 अप्रैल सायं से 06 अप्रैल प्रातः 2025 तक)

इसमें हम जानेंगे मिशन की बनाने की ज़रूरत क्या थी व इसमें अब हमारी क्या भूमिका हो सकती है -

- मिशन की जरूरत व अपनी भूमिका,
- वनस्पति जगत् के अनगनित उपकार व हमारे कर्त्तव्य,
- नौकर व मालिक की भूमिका में हमारी उपयोगिता कैसे बढ़े,
- भाई-बहनों में परस्पर समझ व स्नेह कैसे विकसित हो,
- जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध का आधार क्या हो?
- माँ-बाप को किस आँख से देखें?
- बच्चों को संस्कार कैसे दें व उनका भविष्य कैसे संवारें।

यह मौक़ा है इन साधनों में रिश्तों की नई रोशनी पाने का, खुद पर काम करने का तथा आने वाले जीवन को अर्थपूर्ण बनाने का।

आज ही इस उत्सव से सपरिवार लाभ उठाने का संकल्प लें।

दिनांक	समय	साधन का विषय
03.04.2025	सायं 5:30 से 7:00	मिशन क्यों बना?
04.04.2025	प्रातः 9:00 से 10:30	वनस्पति जगत् और मैं
04.04.2025	सायं 5:30 से 7:00	मेरे सहयोगी व साथी
05.04.2025	प्रातः 9:00 से 10:30	जिनके बीच एक दूध की धारा बहती हैं।
05.04.2025	सायं 5:30 से 7:00	जीवनसाथी से सार्थक सम्बन्ध
06.04.2025	प्रातः 10:00 से 12:00	माँ-बाप का कर्ज़ एवं माँ-बाप का फ़र्ज

स्थान- उच्च जीवन प्रशिक्षण संस्थान (देवाश्रम), 32 ए सिविल लाइन्स, रुड़की,
रजिस्ट्रेशन व सम्पर्क सूत्र-80778-73846

मैं छोटी-छोटी ग़लतियों से भी बचूँगा, ताकि
मेरा व्यक्तित्व विश्वासपात्र बने।

अखबारों के रजिस्ट्रेशन एक्ट के नियम 8 के अनुसार 'सत्य देव संवाद' के विषय में आवश्यक ब्यौरा

1.	स्थान जहाँ से अखबार प्रकाशित होता है	– रुड़की (उत्तराखण्ड)
2.	प्रकाशन की अवधि	– मासिक
3.	प्रिंटर का नाम	– ब्रिजेश गुप्ता
	राष्ट्रीयता	– भारतीय
	पता	– 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की
4.	पब्लिशर का नाम	– ब्रिजेश गुप्ता
	रास्ट्रीयता	– भारतीय
	पता	– 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की
5.	सम्पादक का नाम	– डॉ0 नवनीत अरोड़ा
	राष्ट्रीयता	– भारतीय
	पता	डी–05, हिल व्यू अपार्टमेन्ट्स, आई.आई.टी., परिसर, रुड़की
6.	अखबार के मालिक का नाम और पता	– डॉ0 नवनीत अरोड़ा डी–05, हिल व्यू अपार्टमेन्ट्स, आई.आई.टी., परिसर, रुड़की

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271–46962), दिल्ली (98992–15080), भोपाल (97700–12311), सहारनपुर (92585–15124), गुवाहटी (94351–06136), ग़ाज़ियाबाद (93138–08722), कपूरथला (98145–02583), चण्डीगढ़(94665–10491), पदमपुर (93093–03537), अम्बाला (94679–48965), मुम्बई(98707–05771), पानीपत (94162–22258), लुधियाना (80542–66464)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया सम्पादक – डॉ0 नवनीत अरोड़ा, डी – 05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की ज़िला हरिद्वार – 247667 (उत्तराखण्ड) 01332–285667, 94123–07242